आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 1/जनवरी 2023
Received:16/01/2023; Published:31/01/2023

लेख

मेरे अनुवाद मेरे अनुभव

प्रो. प्रतिभा मुदलियार

आधुनिक युग में अनुवाद की महत्ता व उपादेयता को विश्वभर में स्वीकारा जा चुका है। वैदिक युग के 'पुनकथन :' से लेकर आज के 'ट्रांसलेशन' तक आतेआते अनुवाद अपने स्वरूप और अर्थ में बदलाव लाने -साथ अपने बहुमुखी व बहुआयामी प्रयोजन को सिद्ध कर चुका है। प्राचीन क-के साथाल में 'स्वांतसुखाय :' माना जाने वाला अनुवाद-कर्म आज संगठित व्यवसाय का मुख्य आधार बन गया है। दूसरे शब्दों में कहें तो अनुवाद प्राचीन काल के व्यक्ति की परिधि से निकलकर आधुनिक युग की समष्टि परिधि में समा गया है। आज विश्वभर में अनुवाद की आवश्यकता जीवन के हर क्षेत्र में किसीकिसी रूप में अवश्य महसूस की जा -न-रही है और इस तरह अनुवाद आज के जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बन गया है।

आज से लगभग साल पहले मैंने अनुवाद करना प्रारंभ किया था। विशेषकर मैं मराठी से हिंदी 35 और हिंदी से मराठी में अनुवाद किया करती थी। कभी किसी कविता का तो कभी किसी कहानी का मैं अनुवाद कर दिया करती थी। किंतु मैं उतनी गंभीर नहीं थी। उस समय मेरा एक मात्र उद्देश्य था कि एक भाषा के साहित्य को दूसरी भाषा में पहुँचाया जाय जिससे एक भाषा की साहित्यिक कृति को लक्ष्य भाषा में पहुँचाया जा सकें।

एक बार मैंने अपूर्वा पत्रिका के लिए माधवी देसाई का साक्षात्कार लिया था और उसके तुरंत बाद माधवी जी ने अपनी आत्मकथा मेरे हाथ में दी और उसका हिंदी में अनुवाद करने के लिए कहा। नहीं जानती थी कि मुझ में वह कौशल है भी या नहीं। यह एक बड़ा ही गंभीर काम था। माधवी देसाई जी की आत्मकथा 'नाच ग घुमा' मराठी की बहुचर्चित पुस्तक थी और उसका मुझे हिंदी अनुवाद करना था। यह पुस्तक जहाँ स्त्री अस्मिता को रेखांकित करती है वही महाराष्ट्र की संस्कृति को भी रेखांकित करती है। इस पुस्तक में कई ऐसे शब्द और उक्तियाँ आती हैं जो निखालिस मराठी भाषा की जातियता को निर्धारित करती है। उस समय हिंदी में उस वज़न का शब्द लेना मेरे लिए कठिन था। इस आत्मकथा का शीर्षक ही 'नाच ग घुमा' है जिसका अनुवाद मैंने ,'नाच री घुमा' किया क्यों कि 'घुमा' प्रतीक है उस स्त्री का जो चुपचाप दूसरे की ताल पर नाचती जा रही है। इस आत्मकथा में कर्नाटकमहाराष्ट्र और गोवा इन तीन राज्यों का , ,सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश विशेष रूप से ऊभर कर आया है। अतः आत्मकथा में कहीं कहीं कोंकणी कहीं कहीं कन्नड के शब्द भी आए हैं। अनुवाद करते समय अनुवादक को इतना ध्यान तो अवश्य रखना होता है कि वह मूल सामग्री कों यथावत लक्ष्य भाषा में उतारें जिससे लक्ष्य भाषा के पाठक मूल को अच्छे से

समझ सकें। मैंने यही प्रयास अनुवाद करते समय किया है। उक्त आत्मकथा का अनुवाद करते समय मैं हमेशा अपने पापा या मेरी सहेलियाँ मीरानीता और आशा को पढ़कर सुनाया करती थी। कभी कभी स्वंय माधवी , देसाई को भी मैंने सुनाया था। दिन भर जितना हिस्सा अनुदित हो पाता, वह मैं पढ़ कर सुनाती। इसका सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि अनुवाद का दूसरा प्रारूप भी उसी दिन तैयार होता गया। वह यों कि पढ़कर सुनाते वक्त मैं जहाँ भी अटकती, लड़खड़ाती, या देखती कि पापा बात समझ नहीं पाए हैं, फौरन भाँप लेती कि वाक्य को सुधारने या नए सिरे से लिखने की ज़रूरत है। 'नाच री घुमा' के अनुवाद के दौरान अनुदित अंशों को ज़ोर से पढ़कर किसी को सुनाने और संशोधन करने की जो विधि मैंने सीखी उसका उपयोग बाद में कई गम्भीर पुस्तकों के अनुवाद करते तथा उनका संशोधन करते समय काम आया।

मराठी से हिंदी में अनुवाद करते करते मैंने कुछ रचनाएं हिंदी से मराठी में भी की है। जिसके चलते दिविक रमेश जी ने अपना एक नाट्य काव्य 'खण्ड खण्ड अग्नि' का अनुवाद करने के लिए कहा। वैसे नाटक का अनुवाद करने का अपना जोखिम होता है। इसके साथ काव्य भी था। मुझे बहुत ही सजग होकर अनुवाद करना था। मराठी भाषा हिंदी भाषा की तुलना में कुछ पौरुषी लगती हैं अतः इस नाट्य काव्य के कई शब्दों का अनुवाद करते समय कठिनाई तो आयी लोकिन उसे सुधारा गया। उदाहरण के लिए मूल काव्य में 'सन्नाटा' यह एक पात्र के रूप में आता है और मराठी में इस अर्थ में 'शांतता' शब्द का ही प्रयोग किया जाता है। अब 'सन्नाटा' हिंदी में पुलिंग है तो मराठी में 'शांतता' स्त्री लिंग ऐसे में पुरा भाव बदल रहा था। अब करें क्या? तो ऐसे में मैंने मूल कवि से मिलकर थोडा परिवर्तन कर लिया।

मुझे कविता का अनुवाद करना अधिक पसंद है। हालांकि इसमें चुनौतियाँ तो हैं पर आनंद आता है। तभी मैंने कन्नड कवि आर. के रामानुजम की कविताओं का, जिनका पहले से ही हिंदी में अनुवाद उपलब्ध था, मराठी अनुवाद किया। कविता का अनुवाद करते समय जो सबसे बड़ी दिक्कत आती है वह है तुकबंदी ! और फिर प्रतीकोउपमाओं तथा रूपकों को लेकर , दूसरी दिक्कत। कई बार एक भाषा की तुकबंदी या अंत्यानुप्रास उसी अर्थ में लक्ष्य भाषा में मिलना संभव नहीं होता तो फिर यह समस्या आ ही जाती है। मुक्त छंद की कविता का अनुवाद थोड़ा सरल हो सकता है किंतु छंदोबद्ध रचना का अनुवाद काफी मुश्किल है।

कोरिया में रहते हमने एक परियोजना के अंतर्गत कोरियाई तथा हिंदी शब्दकोश का काम किया तो कोरियाई भाषायी व्यवस्थावहां के रूपक तथा उपमाएँ वहाँ के परिवेश को , थोडा बहुत समझने लगी। मात्र एक उदाहरण के रूप में कहें तो हमारे यहाँ एक लोकोक्ति है 'गरिबी में आटा गिला'इस लोकोक्ति का मराठी , अनुवाद है'अकाल में तेरहवा महीना' जबकि कोरियाई संदर्भ में लोकोक्ति है ,'अकाल में बहु के गाल पर दाढ़ी।' कहने का तात्पर्य यही है कि तीनों वाक्यों का अर्थ एक ही है। पर भावाभिव्यक्ति भिन्न! जब हम अनुवाद करते हैं तो इसी प्रकार की दिक्कतें आती हैं। मेरे लिए भी आयीं जब मैं कोरियाई कहानियों का अनुवाद कर रही थी। मैंने कोरियाई लेखक यी सांग की कहानियों का अनुवाद किया अर्थात इसकी माध्यम

भाषा अंग्रेजी थी। पर मैंने कोरियाई छात्रों तथा प्रोफसरों के साथ वार्तालाप कर शब्दों की अर्थछवियों को समझकर मूल के साथ न्याय करने का प्रयास किया।

कहानीकविता का अनुवाद तो मैं कर रही थी ,उपन्यास , और वह काम आज भी जारी है। लेकिन कन्नड तथा अंग्रेजी के सिद्धहस्त लेखक प्रो हंपा नागराजय्या जी की अंग्रेजी में लिखीं दो पुस्तकें .Bahubali and Badami Chalukya और Rashtrakuta's, Revisited का हिंदी अनुवाद करना मेरे लिए चुनौतिपूर्ण काम था। यह पुस्तकें जहाँ ऐतिहासिक हैं वहीं उसमें भाषाविज्ञान तथा काव्य का पुट भी है। पर चुनौतियों को स्वीकार कर स्वयं को मांजना मुझे बहुत भाता है। मैंने यह काम सहर्ष स्वीकारा। मेरे लिए इतिहास और भाषा विज्ञान से जुडी शब्दावली समझना बहुत आवश्यक था। दोनों पुस्तकों का अनुवाद करने से पूर्व मैंने पहले इसकी भाषा तथा शब्दावली पर कुछ रिसर्च किया ,जैन धर्म से जुडी शब्दावली देखी , जी का अंग्रेजी भाषा पर विशेष अधिकार है। उनका एक एक पढ़ी और फिर अनुवाद का काम किया। हंपना वाक्य कई बार एक परिच्छेद होता है। उस वाक्य का गर्भितार्थ समझकर हिंदी में उसीप्रभावपूर्ण शैली में लाना ज़रुरी था। इसके लिए मुझे काफी परिश्रम करना पड़ा। पहली पुस्तक का अनुवाद करने में मुझे दो वर्ष लगे तो दूसरी पुस्तक में एक वर्ष। लेकिन एक बात बताना ज़रुरी है कि मैं हर रोज़ इस पर काम करती। अगर नहीं भी हुआ तो कम से कम एक परिच्छेद तो अनुवाद करना आवश्यक था ताकि उसकी निरंतरता बनी रहें। इन पुस्तकों का अनुवाद मैंने क्यों किया? कारण कर्नाटक में जैनधर्म के विकासयहाँ की उसकी , यहाँ के चालुक्यों तथा राष्ट्रकूट पर जो अनुसंधान किया गया है वह हिंदी भाषियों तक पहुँच ,स्थिति गति सकें। यह भी बहुत ज़रूरी था। अँग्रेज़ी से अनुवाद करते समय, खासकर जब 'कॉम्प्लैक्स' और 'कम्पाउण्ड' वाक्य अनुवादक के सामने हों तो एक भारी द्वन्द्व स्वतशैली का -उपस्थित हो जाता है। लेखक की भाषा : कोलन जो अँग्रेज़ी में बात के विस्तार से पहले) सम्मान करते हुए उस वाक्य को अपूर्ण विराम काम में लिया जाता हैके साथ (सेमी कोलन जब अँग्रेज़ी में बात को कई टुकड़ों में रखा जाता है) तथा अपूर्ण अर्ध विराम (जाए अनुदित किया, या फिर खड़ी पाई का उपयोग कर उन लम्बे व दुरूह वाक्यों को खण्डित कर दिया जाए? कई बार अनुवादक और लेखक इस बारे में एकमत नहीं होते हैं। एक सम्प्रेषणीयता को सर्वोपरि मान मूल लेखक की भाषाशैली को गौण मानत-ा हैं, तो दूसरा भाषाविचारों शैली का उचित सम्मान करते हुए- को यथासम्भव प्रभावी रूप से सम्प्रेषित करने की सलाह देत ा हैं, फिर चाहे वाक्य विन्यास को हिन्दी के अनुरूप कुछ संशोधित ही क्यों न करना पड़े। ऐसे समय जो समस्या अनुवादक के सामने आती है वह यह है कि, मूल लेखक की भाषावल अपना मूल आकर्षण खोने शैली को नज़रअन्दाज़ करते ही वह पुस्तक न के- लगत ी है, बल्कि अपने वज़ूद को खोकर अनुवाद कुछ सपाटसा बन जाता है। एक अर्थ में वह रचना मूल - लेखक की कुछ कम औरअनुवादक की कुछ अधिक बनने लगती है। दूसरी ओर विचारों का सम्प्रेषण ही तो अनुवाद का प्रयोजन है, अगर वह ही न हो सका तो अनुवाद ही निरर्थक हो जाता है। तो अनुवादक के सामने चुनौती यह है कि वह लेखक की भाषा शैली को साधने की-कोशिश के साथ ही साथ उसके मन्तव्य को सटीकता से सम्प्रेषित करने का प्रयत्न करें। ऊपर उल्लेखित पुस्तकों का अनुवाद करते समय मैंने यही किया है। अनुवाद करते समय मैंने उसमें निरंतरता रखी साथ ही विषय से संबंधित लोगों के साथ शब्दो और

संदर्भों को भी जानने की कोशिश की तब जाकर साहित्येतर विषयों का अनुवाद करना केवल आनंददायक ही नहीं लगा ब्लकि मुझे शब्दसंपन्न कर गया।-

****